समावेशी विकास की ओर

धानमंत्री नरेंद्र मोदी को मिले प्रचंड जनादेश ने जहां एक ओर सरकार की नीतियों पर मुहर लगायी है, वहीं उम्मीदों को पूरा करने की राह भी हमवार कर दी है. हर जनादेश विविध आकांक्षाओं का प्रतिरूप होता है, लेकिन, इस बार उसमें वह भरोसा भी शामिल है, जो पांच सालों के कामकाज से पैदा हुआ है. जीत के बाद अपने गठबंधन की बैठक को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने तमाम भेदभावों को परे रखकर गरीबी से निजात पाने को अपनी प्राथमिकता बनाने की घोषणा की है. इसके लिए उन्होंने सभी पक्षों के साथ मिलकर काम करने की बात कही है. साल 2014 में सरकार बनाने से लेकर इस चुनाव के पहले तक गरीब और निम्न आय वर्ग को देश की आर्थिक वृद्धि में सहभागी बनाने के लिए अनेक योजनाएं बनायी गयीं और कार्यक्रम चलाये गये. अर्थव्यवस्था को ठोस आधार देने के िलए कानुन बने और नीतियों का निर्धारण हुआ. इस चुनाव में राष्ट्रीय सुरक्षा एक अहम मुद्दा रहा और सरकार के रवैये ने देश को नया आत्मविश्वास िदिया है. इस मोर्चे पर ध्यान देते हुए आर्थिक मोर्चे पर और अधिक

मोदी सरकार ने आर्थिक गतिविधियों को अधिक औपचारिक और पारदर्शी बनाने के लिए अनेक पहल की है। इस संबंध में सुधारों के जारी रहने की अपेक्षा स्वाभाविक है .

गंभीरता से काम करने की जरूरत है. समाज के निचले पायदान पर खड़े लोगों की तादाद हमारी आबादी का बहुत बड़ा हिस्सा है. इनके विकास और कल्याण की योजनाओं पर आवंटन न सिर्फ बरकरार रखा जाना चाहिए. बल्कि उसमें बढ़ोतरी भी होनी चाहिए. नीतियों और कार्यक्रमों ने जनता में सरकार के प्रति विश्वास को बढ़ाया है, उसे और मजबूत बनाने की दिशा में पहलकदमी होनी चाहिए. यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि उज्ज्वला योजना के तहत दिया गया एक भी

गैस सिलेंडर किसी मजबूरी में खाली न रह जाये और किसी परिवार को फिर चुल्हे का रुख न करना पड़े. कोई भी शौचालय पानी या नाली के इंतजाम के बिना न हो. लाभुकों के खाते में कल्याण राशि, अनुदान, भत्ता आदि समय से पहुंचे. हमारी अर्थव्यवस्था दुनिया में सबसे तेजी से बढ़ रही है और आगामी सालों में इसके बढ़ते रहने का अनुमान है. मोदी सरकार ने आर्थिक गतिविधियों को अधिक औपचारिक और पारदर्शी बनाने के लिए अनेक पहल की है. इस संबंध में सुधारों के जारी रहने की अपेक्षा स्वाभाविक है. रोजगार बढ़ाने, आमदनी के अवसर पैदा करने तथा किसानों को परेशानी से निकालने की चुनौती सरकार के सामने है. इन मसलों से निपटने के लिए मुद्रा योजना, कौशल विकास, समर्थन मूल्य में वृद्धि, किसान सम्मान राशि, बीमा आदि जैसे उपायों को विस्तार देने पर विचार किया जाना चाहिए. अगले एक दशक में देश की अर्थव्यवस्था को 10 ट्रिलियन डॉलर तक ले जाने का लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है, पर गरीबी के चंगुल से निकलने की कोशिश में अगर इसे पाने में कुछ देर हो जाये, तो चिंता की बात नहीं है. प्रधानमंत्री मोदी के पास विचार-दृष्टि और नेतृत्व-क्षमता है. जनादेश के रूप में मिली आशा और विश्वास की इस पूंजी ने उन्हें राष्ट्र-निर्माण के उनके अभियान को पूरा करने का अभूतपूर्व अवसर प्रदान किया है.



महान कर्म

वही हूं. मैं उस ब्रह्म परमात्मा की प्रतिच्छाया को संबंधित करता हूं और वही हूं संबंध करता है उस परमात्मा का. हमारे शरीर में लाखों कण है. इन कणों में भी तो प्रतिच्छाया है, परमात्मा की ज्योति है. पर उस ज्योति का ज्ञान नहीं है. मनुष्य में चैतन्य है, इसलिए वह कह पाता है कि मैं वही हूं. इसमें मेरा मुख्य वक्तव्य यही था कि मनुष्य सब कुछ कर सकता है. वह सबसे महान कर्म जो परमात्मा को पाना है, वह भी कर सकता है, अपनी शक्ति की बदौलत, ज्ञान हो, चाहे न हो. मान लो, जो अधिक पढ़े-लिखे नहीं हैं, ज्ञानी नहीं हैं, बोल के परमात्मा को पायेंगे नहीं, यह कोई बात नहीं हुई. मान लो, कोई अस्वस्थ है, कुछ अधिक मेहनत भी नहीं कर सकता है, कर्म नहीं करने से वह परमात्मा को नहीं पायेंगे, यह कोई बात नहीं हुई. तुम व्यष्टिगत जीवन में देखो, मान लो तुम्हारा एक बेटा है. लिखना-पढ़ना नहीं सीख सका बेचारा. उसका स्वास्थ्य भी कुछ ठीक नहीं है. क्या तुम उस बेटे को प्यार नहीं करते हो? ठीक ऐसे, जिसे ज्ञान नहीं है अथवा स्वास्थ्य भी ठीक नहीं है, वह भी परमात्मा को पा सकेगा. परमात्मा के प्रति प्रेम रहने से ज्ञान हो गया. यही बात तुम हमेशा याद रखोगे कि जहां भक्ति नहीं है, कुछ नहीं है. मान लो, तुम्हारा बेटा जो काफी लिखा-पढ़ी सीखे, अथवा काफी मेहनती भी है; मगर तुम्हारे प्रति प्रेम नहीं है, तो क्या करोगे, नापसंद करोगे न ! लिखना-पढ़ना एक तलवार जैसा है. तो परमात्मा के लिए जिनमें भक्ति है, उनमें सब कुछ है, वे सब कुछ पायेंगे. किंतु याद रखो कि कभी किसी प्रकार का अन्याय, किसी प्रकार के पाप का समर्थन नहीं करोगे, किसी भी हालत में. दूसरी बात है खाने का, सोने का, स्नान करने का अगर समर्थन नहीं भी मिले, किंतु पूजा ठीक से होनी चाहिए दोनों समय. पूजा एकदम आवश्यक है. याद रखो कि 24 घंटा व्यस्त हो काम से, थोड़ा-सा समय मिल गया, थोड़ी-सी फुर्सत मिल गयी, उसमें पहले पूजा और थोड़ा और समय मिल गया तो स्नान, पूजा भी और थोड़ा-सा और भी समय मिल गया तो थोड़ा-सा विश्राम. श्रीश्री आनंदमूर्ति

कुछ अलग

धूप-छांव और सुख-दुख

कविता विकास

लेखिका

kavitavikas28@gmail.com

वैशाख का महीना. चिलचिलाती धूप.आदमी क्या, पशु-पक्षी भी अपने-अपने दड़बे में दुबके रहते हैं. ग्यारह बजते-बजते गलियां सुनसान पड़ जाती हैं. गरमी और पसीने से बेहाल

लोग मौसम को कोसते हैं. इसके विपरीत जो मौसम की प्रतिकूलता को सहज भाव से स्वीकार करते हैं, वे स्वस्थ और सिक्रय होते हैं. हम जितना खुद को छुपायेंगे, प्रतिरोधक क्षमता उतनी ही कमजोर होगी. कहने का तात्पर्य यह नहीं कि असह्य धूप में निकल जायें और बीमार पड़

जायें, पर जितना हो सके सहजता से अपना काम करते रहें. अब जब कूएं और तालाब सूख रहे हैं, पक्षियों की कोलाहल भी लुप्त होने को है, धूप में आंखें चौंधियाकर बंद हो रही हैं, तो थोड़ा घर के पास उगे दुब को निहार लें. लघुता ते प्रभुता मिले वाली बात चरितार्थ हो जायेगी! सड़क किनारे लगे दानी अमलतास धरती का आंचल हल्दिया रहा है. महुआ अपनी पीत मुस्कान में वायवी उड़ानों संग मधुर-मदिर शोखी छलकाता गिर रहा है. गुलमोहर सदियों से प्रेयसी-प्रियतम के रूप-सौंदर्य में उपमान बन शृंगरित होता रहा है और जिंदगी की धूप में भी आशा का संचार कर रहा है. सेमल नर्म रुई जैसी नर्म कल्पनाओं का प्रतीक बन खड़ा है. गजब है यह नैसर्गिक रूप-लावण्य, मानो धरती के सबसे चेतनशील प्राणी को जिंदगी की तकलीफों में भी तटस्थ रहने की प्रेरणा दे रहा हो.

कहते हैं, मौसम के अनुसार फसल उगते हैं. अपने आस-पास करेले, परवल, नेनुआ, तोरी आदि की बेलों

को देखें. कैसे पतली-पतली डालियां बढ़कर मचानों में चढ़ जाती हैं. जितनी प्रखर धूप होगी उतनी ही हरी-हरी इनकी पत्तियां होंगी. देश के खेतिहर समाज फसल के पकने के लिए प्रचंड धूप का इंतजार करते हैं और जमीं से सोना

समेटकर पुरे देश को यह उपहार बांटते रहते हैं. हमारे ऊपर भी दुख के गहरे बादल हमें बलवान और सहनशील ही बनाते हैं. आह से उपजा गान में वियोगी कवि की वेदना चरम सीमा पर होती है, जैसे धूप से कातर बेली, चमेली, मालती के पौधे हरियाली के साथ-साथ खुशबू भी बिखेरते रहते हैं.

मौसम प्रकृति की ओर लौटने का संदेश देते हैं और गरमी सीधे-सीधे वृक्ष से नाता जोड़ती है. इसलिए हमें खूब पेड़ लगाने चाहिए. कुछ पाने के लिए कुछ खोना पड़ता है. पर कुछ खोकर अगर बहुत कुछ मिल जाये, तो क्या कहने. थोड़ी गरमी सहन कीजिये तो अच्छी बारिश मिलेगी, मौसमी फल-फूलों का सेवन करने को मिलेगा, धूप में लहलहाते पेड़ों के नयनाभिराम दृश्य मिलेंगे, भरपूर अनाज और देश की किसानी संस्कृति को शक्ति मिलेगी. गर्मी बेसहारों के लिए वरदान है. जिंदगी की धूप भी क्षणिक है, छांव मयस्सर होती ही है. बस मन में ठान लें, गरमी है तो क्या, आकर्षण उसमें भी है. प्रकृति में धूप और छांव का सबसे सुंदर समायोजन है, जिंदगी के लिए शीत और ताप दोनों आवश्यक हैं. अतिशय दुख मनुष्य को तोड़ देता है तो अतिशय सुख उसे स्वार्थी और घमंडी बना देता है. इसलिए बारी-बारी से सुख-दुख का आवागमन उसे धरातल से जोड़े रखता है.

हार से सबक लेकर उठायें कदम

स तरह की जबरदस्त हार से विपक्ष खुद को कैसे बाहर निकाल पायेगा? हममें से वे लोग जो राजनीति में नहीं हैं, वे संभवतः ऐसी बड़ी पराजय को पूरी तरह कभी नहीं समझ पायेंगे. हार की समस्याएं व्यक्तिगत तौर पर शुरू होती हैं. खुद में विश्वास की कमी और हार के बाद जिस अलग नजर से लोग देखते हैं, उसका सामना हम जैसे लोगों को इस स्तर पर नहीं करना पड़ता है. अपने काम के दौरान हमें जो हार और घाटा मिलता है. वह ज्यादातर व्यक्तिगत होता है और दूसरे उसे तभी जान पाते हैं, जब हम खुद उन्हें इसकी जानकरी देते हैं. विपक्षी नेताओं के लिए यह सब कुछ सार्वजनिक है. इसके बाद आपको उस विरोधी का सामना करना है, जिसने आपको बुरी तरह हराया है. युद्ध में पराजित होनेवालों के लिए मृत्यु होती है या फिर समर्पण, राजनीति में हार अतीत बन जाता है, जो हो गया, सो हो गया. यह वर्तमान है और अब आपको इसी में जीना है और उन्हीं लोगों के साथ काम करना है, जिन्हें आप कल तक भला-बुरा कह रहे थे. लेकिन अब यहां कोई तर्क नहीं बचा है और आप हार चुके हैं. अब यहां से आपको क्या करना चाहिए? पराजित होनेवाले नेताओं को सलाह देनेवालों की कमी नहीं होगी. विशेषकर मीडिया की तरफ से कि क्या गलत हुआ और अब आपको क्या करना चाहिए. उनमें से कुछ उपयोगी होंगी, लेकिन मेरा अनुमान है कि उनमें से ज्यादातर अनुपयोगी ही होंगी.

वस्तुतः लिखने का तीस या चालीस साल का अनुभव किसी रैली को पैंतीस मिनट संबोधित करने और भीड़ से आते हुए संदेश का विकल्प नहीं हो सकता है. हार और जीत में छिपे गहन कारकों को हारनेवाले से बेहतर कोई नहीं समझ सकता है. वे सभी युद्धक्षेत्र से होकर आ चुके हैं. उन्होंने अपने योद्धाओं और विरोधियों की आंखों में आंखें डालकर देखा है. उनके पास जो जानकारी है, वह वास्तविकता और सच्चे अनुभव पर आधारित है.

डॉ अनुज लुगुन

सहायक प्रोफेसर, दक्षिण

बिहार केंद्रीय विवि, गया

anujlugun@cub.ac.in

विपक्ष का विचार

उसके राजनीतिक

सांख्यिकी आंकड़ों

चाहिए, न ही उसका

क्षेत्र राजनीति तक

ही सीमित हो . इसे

विचार, चिंतन साहित्य

और कला की दुनिया

तक फैलना चाहिए.

से तय नहीं होना

तो, इस समझ के साथ और उन्हें सलाह दिये बिना, आइए देखें कि हमें क्या लगता है कि वे कैसे कदम उठा सकते हैं. वर्ष 1950 के दशक में जब पाकिस्तानी जनरल अयुब खान ने खुद को देश का राष्ट्रपति घोषित किया, तब उन्होंने कहा था कि उन्होंने सबसे पहले अपनी स्थिति का आकलन किया. आम तौर पर यह एक सैन्य अवधारणा है, जो उस स्थिति को रेखांकित करता है, जिसमें एक व्यक्ति स्वयं को पाता है. मेरे विचार से यह एक अच्छा पहला कदम होगा.

जीत का आकलन करना दिलचस्प होता है. सैन्य इतिहास के छात्र फार्सलस में जुलियस सीजर या झेलम में सिकंदर के मानचित्र के बारे में घंटों अध्ययन करते हैं. संभवतः हार की स्थिति का आकलन करने के लिए यह कष्टकारी है, परंतु फिर भी ऐसा किया जाना चाहिए. राज्य-दर-राज्य और प्रत्याशी-दर-प्रत्याशी के हिसाब से अपनी स्थिति का मुल्यांकन होना चाहिए. मेरा मतलब निर्णय से नहीं है. इस आकलन में विरोधी का एक ईमानदार और भावनाविहीन अध्ययन होना चाहिए.

संभवतः एक नेता और एक प्रबंधक के पास जो सबसे धारदार हथियार होता है. वह है पारदर्शिता. एक कहावत है कि सूर्य का प्रकाश सर्वोत्तम कीटाणुनाशक होता है. पराजय के बाद और विजेताओं के उत्सव से पूर्ण



आकार पटेल

कार्यकारी निढेशक. एमनेस्टी इंटरनेशनल इंडिया

delhi@prabhatkhabar.in

हारनेवाले दलों, खासकर पुरानी पार्टियों को अपने बुनियादी सिद्धांतों की तरफ वापस जाना चाहिए और परीक्षण करना चाहिए कि वर्तमान में पार्टी उन सिद्धांतों से कितनी दूर

और कितनी पास है.

जाकर पड़ताल करना आवश्यकता है. वह सब कुछ जिसके लिए विपक्ष को कोसा जाता था, जैसे-आक्रामक नहीं होना, लापरवाही का भाव, छुट्टियों पर चले जाना,

रूप से निरुत्साह हो चुके योद्धाओं और समर्थकों के लिए खुलापन उत्साहवर्धक होगा. अगर पराजित होनेवाले वास्तविकता का सामना करें कि वे किन कारणों से हारे हैं और अभी वे कहां खड़े हैं, तो उनमें एकता की भावना पैदा होगी.

इसके बाद उत्तरदायित्व का मद्दा है. मेरा मतलब दोष देना नहीं है. मेरे विचार से एक नेता के लिए पद त्यागना और दूर जाना आसान होगा और संभवतः यह सही कदम होगा. लेकिन यह सब एक क्रम में होना चाहिए, जिसमें पारदर्शिता पहले आती हो. ध्वस्त हो चुकी चीजों को एक साथ समेटने के लिए आवश्यक महत्वपूर्ण कदम उठाये बिना पीछे हट जाना सिर्फ झल्लाहट और अहंकार की तरह का ही कार्य होगा. इस समय निःस्वार्थ होने की आवश्यकता है.

मेरी राय में विपक्ष इस चुनाव में इससे अधिक कुछ और नहीं कर सकता था. इस चुनाव में जो हुआ, उसका कारण किसी गठजोड़ में हुई चुक और कहीं बेकार उम्मीदवार उतारना नहीं था. इस स्तर का परिणाम किसी रणनीति या पैंतरे से नहीं रोका जा सकता है. इसके लिए गहराई में

गठबंधन के लिए उत्सुक नहीं होना आदि- इन सभी

पहलुओं को ठीक किया गया था. इसके बावजूद अगर हार मिली है, तो ऐसा उसकी जागरूकता या प्रयास की कमी की वजह से नहीं हुआ है. उससे कहीं अधिक शक्तिशाली शक्तियां उसके सामने थीं.

एक और चीज जो होनी चाहिए, वह है सहयोगी और दोस्तों को इकट्ठा करना. विपक्ष के पास नागरिक समाज, मतलब गैर-सरकारी संगठन जैसे समूह, की सहानुभूति है. ये समूह उन मुद्दों के लिए लड़ते हैं, जो राजनीतिक क्षेत्र में भी हैं. इनमें से कई जमीन से जुड़े संगठन हैं. ये समृह आकलन और पुनर्निर्माण दोनों में मददगार हो सकते हैं.

एक बात यह भी है कि हारनेवाले दलों, खासकर पुरानी पार्टियों को अपने बुनियादी सिद्धांतों की तरफ वापस जाना चाहिए और परीक्षण करना चाहिए कि वर्तमान में पार्टी उन सिद्धांतों से कितनी दूर और कितनी पास है. उसके भीतर कुछ तो ऐसा था, जिसने अपनी तरफ देशवासियों को आकर्षित किया था. कैसे उसे या उसके एक संस्करण को फिर से लोगों के सामने लाया जा सकता है! यह एक अच्छा प्रश्न है, जिसके लिए कुछ चिंतन और समझ की जरूरत होगी.

दूसरी बात यह है कि उत्साह बनाये रखने की जरूरत है. दुनिया के हर हिस्से में नागरिक समाजों और स्वयंसेवी संगठनों को सफलता से कहीं ज्यादा हार का स्वाद चखना पड़ा है. वे गीतों के माध्यम से ऐसा ही करते हैं. स्वयंसेवा किसी उद्देश्य से प्रेरित होती है, लेकिन काम खुशमिजाजी से होना चाहिए और उससे ऊर्जा लेनी चाहिए.

अंतिम बात, गैर-सलाह के इस हिस्से में, एक दिनचर्या की शुरुआत करना है. दिनचर्या अद्भुत चीज है. बस उठना व एक नियत समय पर काम करना और खुद को संगठित करना कुछ चमत्कार कर सकता है. दिनचर्या हमें उन छोटे कदमों को उठाने के लिए तैयार करती है, जिसे हमें उठाना चाहिए, और यह हमारे अंदर विश्वास भरती है कि हम आगे बढ़ रहे हैं.

लोकतंत्र में विपक्ष का विचार

जपा की एकतरफा जीत ने विपक्ष के अस्तित्व को संकट



भाजपा शुरू से ही वंशवाद और परिवारवाद के खिलाफ हमलवार रही है. वह अपने धुर विरोधी कांग्रेस, सपा और राजद पर यह आरोप लगाती रही है, अपने खेमे के दलों पर नहीं. वह जनमानस के बीच में इस विचार को ले जाने में सफल भी रही. अब जबकि उसके विरोधी खेमे के दिग्गज राजनीतिक परिवारों को हार का सामना करना पड़ा, तो यह कहा जा रहा है कि परिवारवाद का खात्मा हो रहा है. साथ ही अस्मिता की राजनीति करनेवालों के बारे में कहा जा रहा है कि जातिवादी राजनीति का समय भी खत्म हो गया है. भाजपा की जीत के विश्लेषण का एक पक्ष यह भी रखा जा रहा है कि भाजपा ने वंशवादी, जातिवादी राजनीति को समाप्त कर दिया है. लेकिन ऐसा तो नहीं है कि पूरा विपक्ष ही वंशवाद की चपेट में है, या वह जातिवादी-अस्मितावादी राजनीति करता है. कम-से-कम यह आरोप वामपंथी दलों पर नहीं लगाया जा सकता है.

भारतीय संसदीय राजनीति के इतिहास में अवसरवाद उत्तरोतर बढ़ा है. राजनीति में नहीं लेकिन साहित्य में तो इसके पुख्ता सबूत दर्ज हैं. साल 1954 में ही रेणु ने 'मैला आंचल' लिखकर गांधीवादी विचार की हत्या, कांग्रेस की नाकामी, सोशलिस्ट-कम्युनिस्टों और हिंदू धार्मिक संगठनों के अंतर्विरोध के जरिये आजाद भारत की अवसरवादी राजनीति का चित्र खींच दिया था. बाद में धूमिल जैसे युवा कवियों ने खुलकर जनता से दूर होती संसदीय राजनीति की आलोचना की. कांग्रेस, गैर-कांग्रेस के बीच के द्वंद्व और राजनीतिक उठा-पटक का लंबा इतिहास रहा है. इसी राजनीतिक प्रतिस्पर्धा और महत्वाकांक्षाओं के बीच में जनता पिसती रही है और उसने हमेशा जनपक्षधर शासन की उम्मीद में अपने मत का प्रयोग किया है. लेकिन उसके लिए जनपक्षधर शासन का आना अब भी बाकी रह गया है. नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली भाजपा ने जनता के सामने उसी अवसरवादी राजनीति का चेहरा रखने की कोशिश की है. भाजपा ने जनता के सामने 'विकास' की जो बात रखी है उसकी परिभाषा में जनता की बुनियादी बातें उतनी नहीं हैं, जितनी कि पहले से शासनरत उसके विरोधी दलों के अवसरवादी चरित्र और व्यवहार की आलोचना है. उसके 'विकास' की परिभाषा में शामिल है हिंदुत्व गैर-कांग्रेसवाद, अस्मितावादी राजनीति का विरोध, देशभक्ति, संस्कृति और राष्ट्रवाद की भावनात्मक अपील. भाजपा की यह कुशल रणनीति रही है कि उसने अपने विरोधी दलों के एजेंडों को ही देश की दुर्दशा का कारण बताया और जनता को इसका समर्थन करने के लिए तैयार भी कर लिया. लेकिन इतने से तो न देश चलता है, न लोकतंत्र और न ही जनता का हित सिद्ध होता है. जनता की वास्तविक चुनौतियां व्यापक हैं. उन्हें केवल लोकप्रिय या भावनात्मक अपील से दूर नहीं किया जा सकता जनता के बुनियादी मुद्दों से ही सत्ता पक्ष या विपक्ष का विचार निर्मित होना चाहिए. इस संबंध में विपक्ष को ज्यादा सतर्क रहने की जरूरत होती है.

भाजपा के विरोधी विपक्षी दलों की सबसे बड़ी कमजोरी यह रही है कि वे सत्ता पक्ष की आलोचना करने में वैचारिक रूप से एक नहीं हो सके. एक तरह से देखा जाये तो सत्ता पक्ष के कई विपक्ष थे. कांग्रेस, तृणमूल कांग्रेस, सपा-बसपा, राजद और वामपंथी इत्यादि उसके कई विपक्ष थे. इनके अपने-अपने हित थे और वे सरकार की नीतियों की समग्र आलोचना कर उसे जनता के बीच ले जाने के बजाय भविष्य में अपना अस्तित्व भी देख रहे थे. इस तरह के खंडित विपक्ष से जनता के सामने विकल्प की कोई तस्वीर नहीं उभरती है. उदाहरण के लिए पश्चिम बंगाल में तृणमूल कांग्रेस की सरकार है और भाजपा वहां उसकी विपक्षी पार्टी है. दूसरी ओर केंद्र में भाजपा की सरकार है और तृणमूल उसकी विपक्षी पार्टी है. भाजपा पश्चिम बंगाल सरकार की जिस आक्रामकता से आलोचना करती है, ठीक उसी तरह तृणमूल केंद्र की भाजपा सरकार की मुखरता से समग्र आलोचना नहीं कर पाती है. तृणमूल अन्य विपक्षी दलों से जुड़कर समस्त विपक्ष का एक स्वर नहीं बन पाता है. यही स्थिति कांग्रेस और अन्य दलों की है. आज की गठबंधन वाली संसदीय राजनीति में एनडीए के बरक्स यूपीए की यह रणनीतिक कमी है.

विपक्ष का विचार उसके राजनीतिक सांख्यिकी आंकड़ों से तय नहीं होना चाहिए, न ही उसका क्षेत्र राजनीति तक ही सीमित हो. इसे विचार, चिंतन साहित्य और कला की दुनिया तक फैलना चाहिए. यह जनता के प्रति प्रतिबद्धता और ईमानदारी से तय होना चाहिए. प्रेमचंद ने तो साहित्य को राजनीति से आगे चलनेवाली मशाल कहकर उसके पक्ष को बहुत पहले स्पष्ट कर दिया था. विपक्ष को चाहिए कि वह हमेशा अपना विचार मजबूत करे, न कि वह केवल सांख्यिकी आंकड़ों की गणना करे.



बिजली की समस्या पर दें ध्यान

गर्मी आते ही राजधानी रांची में बिजली की समस्या अक्सर देखने को मिलती है. 24 घंटे बिजली देने का दावा करने वाले हमारे मुख्यमंत्री को शायद यह आभास ही नहीं कि राजधानी में ही मेंटेनेंस के नाम पर घंटों बिजली काट ली जाती है. बिजली के संकट की वजह से पानी की भी समस्या देखने को मिलती है. सरकार अगर आम नागरिकों की बिजली-पानी जैसी मूलभूत सुविधाओं को सुचारु रूप से प्रदान करने में सक्षम नहीं हो पा रही है, तो यह गंभीर मामला है. रांची में बिजली की समस्या सिर्फ गर्मियों में ही नहीं, बल्कि लगभग पूरे साल बनी रहती है. अखबार में इसके लिए एक कॉलम बना रहता है कि फलां-फलां जगह बिजली नहीं रहने से लोग परेशान रहे, हंगामा किया या सरकार से गुहार लगायी. एक ऐसा प्रदेश, जिसके कोयले से कितने ही राज्यों को रोशनी मिलती है, अगर वही अंधेरे में रहे, तो वाकई यह चिंताजनक है.

कन्हाई लाल, रांची

मंत्रालय की कार्यशैली पर सवाल

क्या सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को चाहने वाले जर्मन महिला फ्रेडरिक एरिना ब्रूनिंग को टुकड़े-टुकड़े गैंग की सदस्य कहेंगे? एरिना को भी अपना पद्मश्री सम्मान लौटाने पर विचार करना पड़ा. उनके इस विचार के पीछे जो कारण हैं, वह बिल्कुल जायज हैं. केंद्र सरकार ने ही गौ-धन की सेवा करने के लिए उन्हें इस पद्म सम्मान से सम्मानित किया था. वह अपना देश त्याग कर पिछले 25 वर्षों से मथुरा में गायों के लिए आश्रम चला रही हैं. उन्होंने अपना घर- परिवार इस नेक काम के लिए छोड़ दिया. सबसे बड़ी बात कि इस सरकार के लिए 'गाय' एक संवेदनशील विषय है. इसी के नाम पर पूरी राजनीति की जा रही है. फिर भी इनके वीजा अवधि बढ़ाये जाने की मांग विदेश मंत्रालय ने खारिज कर दी थी. हालांकि सुषमा स्वराज जी ने हस्तक्षेप कर उनकी वीजा अवधि बढ़ा दी है, पर इस प्रकरण ने मंत्रालयों की कार्यशैली पर एक बहस छेड़ दी है.

जंग बहादुर सिंह, गोलपहाड़ी, जमशेदपुर

महाजाम से मिले मुक्ति

कटिहार-मनिहारी सड़क मार्ग पर मूल रूप से दो बड़े कोल्ड स्टोरेज और दो बड़े धर्मकांटा हैं. कटिहार कोर्ट-कचहरी जाने के क्रम में कार्यालय अवधि में ही माल की लोडिंग, अनलोडिंग, नपाई, भंडारण, बिक्रीकरण इत्यादि के लिए सैंकड़ों ट्रैक्टर आदि बीच सड़क पर ही 5-6 घंटे तक खड़े रहते हैं. इससे समय पर कोर्ट-कचहरी जाना या फिर मार्केटिंग करना नहीं हो पाता है. संबंधित अधिकारी से लिखित शिकायत करने के बावजूद जाम तो यथावत रहता ही है और शिकायत-पत्र की रिसीविंग भी अधिकारी नहीं देते हैं. अखबारों का भी इस ओर ध्यान नहीं है. मेरी गुजारिश है कि जिस तरह मनिहारी बाजार में ट्रकों के आवागमन पर सुबह छह बजे से रात 10 बजे तक रोक है, उसी प्रकार रात 10 बजे से सुबह छह बजे के बीच ही इन कोल्ड स्टोरेजों और धर्मकांटाओं से माल की लोडिंग-अनलोडिंग आदि कार्य तय किये जाएं, ताकि महाजाम से लोगों को निजात मिल सके.

प्रो सदानंद पॉल, नवाबगंज, कटिहार

देश दुनिया से कारून कोना

चीन की पारंपरिक औषधियों को स्वीकृति

चीन की पारंपरिक औषधियों (ट्रेडिशनल चाइनीज मेडिसिन यानी टीसीएम) को स्वीकृति देने के लिए चीन के विशेषज्ञों ने विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) का स्वागत किया है. इस कदम से चीन की पारंपरिक औषधियों को दुनियाभर के बाजारों में फैलने का रास्ता साफ हो गया है. यही नहीं, इन औषधियों के अंतरराष्ट्रीयकरण से कई बीमारियों का इलाज संभव होगा, वहीं इससे चीन की पारंपरिक औषधियों के एकीकरण में भी मदद मिलेगी. चीन

TIMES

की सरकारी समाचार एजेंसी सिन्हुआ ने बताया है कि चीन की पारंपरिक औषधियों का प्रयोग दुनिया के 183 देशों में कहीं-कहीं होता आ रहा है, लेकिन डब्ल्यूएचओ से स्वीकृति मिलने के बाद अब इसका विस्तार होगा. बीजिंग ने दुनिया के 40 से ज्यादा बड़े देशों के साथ टीसीएम कोऑपरेशन एग्रीमेंट्स साइन किया है, जिसमें अमेरिका, रूस, यूके, जर्मनी, फ्रांस, कनाडा और इटली प्रमुख हैं. इसके अलावा, चीन अपने महत्वाकांक्षी परियोजना बेल्ट एंड रोड में भी कई जगहों पर टीसीएम सेंटर खोलेगा. चीन ने कोरिया, सिंगापुर और मलेशिया के साथ अंतरसरकारी तंत्र भी स्थापित किया है, ताकि टीसीएम को विश्वव्यापी विस्तार दिया जा सके.



पोस्ट करें : प्रभात खबर, १५ पी, इंडस्टियल एरिया, कोकर, रांची ८३४००१, **फैक्स करें** : **०६५१-२५४४००**६. मेल करें : eletter@prabhatkhabar.in पर ई-मेल संक्षिप्त व हिंदी में हो . लिपि रोमन भी हो सकती है